समस्याओं का सामना कैसे करते आए हैं क्या वे मदद तक पहुँच सकते हैं? कुछ मामलों में, यह मानसिक स्वास्थ्य समस्याएँ, महामारी के परिणामस्वरूप एकाएक बिगड़ सकती हैं।

- **समस्याओं की गम्भीरता :** जो समस्याएँ हर रोज़ कमोबेश पूरा-पूरा दिन बनी रहती हैं, वे ज़्यादा गम्भीरता की ओर संकेत कर सकती हैं। इसके साथ ही हमें, जोखिम के संकेतों पर भी नज़र रखनी चाहिए। इनमें बार-बार मरने का ख़याल आना और जीने की इच्छा न होने जैसे संकेत शामिल हैं।
- **ख़ुद की देखरेख करने की इच्छा :** मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं के कारण किसी को अपनी देखभाल करने या कपड़े बदलने की इच्छा न होना।

Notes:

1. These responses were first published on the Indian Scientists' Response to CoViD-19 (ISRC) website.
2. Source of the image used in the background of the article title: https://www.istockphoto.com/photo/quarantine-for-old-people-gm1219512973-356745103.

आईएसआरसी (इंडियन साइंटिस्ट रिस्पॉन्स टू कोविड-19) 500 से ज़्यादा भारतीय वैज्ञानिकों, इंजीनियरों, टेक्नोलॉजिस्टों, डॉक्टरों, जन स्वास्थ्य शोधकर्ताओं, विज्ञान सम्प्रेषकों, पत्रकारों और विद्यार्थियों का एक समूह है। यह लोग *कोविड-19* महामारी का सामना करने के लिए स्वेच्छा से एकजुट हुए हैं। समूह से indscicov@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** मनोहर नोतानी



क्या धतूरे के सेवन से SARS-CoV-2 का संक्रमण रोका जा सकता है?

Datura stramonium नाम की झाड़ी एशिया, अफ्रीका और अमेरिका में व्यापक रूप से फैली है। तथ्य यह है कि इसके गोलाकार काँटेदार फल (इसलिए इसे काँटेदार सेब भी कहते हैं) का स्पाइक प्रोटीन वाले SARS-CoV-2 वायरस सरीखा दिखना महज़ एक संयोग है। इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि इस पौधे या इसके किसी हिस्से में वायरस-रोधी गुण होते हैं।

धतूरे के पौधे के हिस्से उन यौगिकों में समृद्ध होते हैं जिन्हें ट्रोपेन अल्कुलॉइड कहा जाता है और जिनका उपयोग मोशन सिकनेस (सफ़र के दौरान चक्कर आने, सिर घूमने, जी मिचलाने आदि) और धीमी हृदय गति के चलते निम्न रक्तचाप के इलाज में होता है। लेकिन इन यौगिकों के अनेक प्रतिकूल प्रभाव भी होते हैं। यह न सिर्फ़ विभ्रामक (इनका सेवन करने से लोग ऐसी चीज़ें देखने या सुनने लगते हैं जो असल में नहीं होतीं) होते हैं,बल्कि इनके सेवन से दिशा-भटकाव अलग होता है, दिल की धड़कनें तेज़ और अनियमित हो जाती हैं, जिसके चलते जान भी जा सकती है। दरअसल, बिना डॉक्टरी सलाह के इन यौगिकों का, आंशिक धतूरे या इसके समूचे पौधे का, सेवन जानलेवा हो सकता है।

Notes:

1. This response was first published on the Indian Scientists' Response to CoViD-19 (ISRC) website.
2. Source of the image used in the background of the article title: https://www.flickr.com/photos/99758165@N06/18652364948. Credits: NY State IPM Program at Cornell University. License: CC-BY.

आईएसआरसी (इंडियन साइंटिस्ट रिस्पॉन्स टू कोविड-19) 500 से ज़्यादा भारतीय वैज्ञानिकों, इंजीनियरों, टेक्नोलॉजिस्टों, डॉक्टरों, जन स्वास्थ्य शोधकर्ताओं, विज्ञान सम्प्रेषकों, पत्रकारों और विद्यार्थियों का एक समूह है। यह लोग *कोविड-19* महामारी का सामना करने के लिए स्वेच्छा से एकजुट हुए हैं। समूह से indscicov@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** मनोहर नोतानी